

॥ निरगुणमानस पूज ॥

शिष्य उवाच ..

अथेते सच्चिदानन्दे निरिबकल्पैकरूपिणि .
स्थितेद्वितीयभावेपि कथं पूजा विधीयते .. १..
पुरणस्याबाहनं कुत्र सरबाधारस्य चासनम् .
स्वच्छस्य पादमरघ्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः .. २..
निरमलस्य कुतः स्नानं बासो विश्वादेरस्य च .
अगोत्रस्य त्वररगस्य कुतस्तस्योपवीतकम् .. ३..
निरेलपस्य कुतो गन्धः पुष्पं निरवासनस्य च .
निरिबशेषस्य का भुषा कोलङ्कारो निराकृतेः .. ४..
निरङ्गनस्य किं धूपैरदीपैरवा सरबसाम्बिणः .
निजानन्दैकतृप्तस्य नैवेद्यं किं भवेदिह .. ५..
विश्वानन्दयितुस्तस्य किं ताम्बूलं प्रकल्पते .
स्वयंप्रकाशादिद्रूपो योसावरकादिभासकः .. ६..
गीयते श्रुतिभित्तस्य नीराजनविधिः कुतः .
प्रदम्बिणमनन्तस्य प्रणामोद्भवबस्तुनः .. ७..
वेदवाचामवेदस्य किं वा स्तोत्रं विधीयते .
अन्तरवहिः संस्थितस्य उद्वासनविधिः कुतः .. ८..

गुरुवरुवाच ..

आराधयामि मणिसंनिभमात्रलिनङ्गम्
मायापुरीहृदयपङ्कजसंनिविष्टम् .
शुद्धानदीविमलचित्तजलाभिषेकै-
र्नित्यं समाधिकूसुमैरनपुनरुभवाय .. ९..
अयमेकोबशिष्टोस्मीत्येवमाबाहयेच्छिबम् .
आसनं कल्पयेत्पश्चात्स्वप्रतिष्ठात्रचिन्तनम् .. १०..
पुण्यपापरजःसङ्घो मम नास्तीति वेदनम् .

পাদ্যং সমরপযেদিবদবনসরবকল্লঘনাশনম্ .. ১১..
 অনাদিকল্পবিধৃতমূলোত্তানজলাঙ্গলিম্ .
 বিসৃজেদাত্মলিঙ্গস্য তদেবারঘ্যসমরপণম্ .. ১২..
 ব্রহ্মানন্দাবিধকল্লোলকণকোটং শলেশকম্ .
 পিবন্তীন্দ্রাদয় ইতি ধ্যানমাচমনং মতম্ .. ১৩..
 ব্রহ্মানন্দজলেনৈব লোকাঃ সরেব পরিপ্লুতাঃ .
 অচ্ছেদ্যোযমিতি ধ্যানমভিষেচনমাত্মনঃ .. ১৪..
 নিরাবরণচৈতন্যং প্রকাশোস্মীতি চিন্তনম্ .
 আত্মলিঙ্গস্য সদবস্তুমিত্যেবং চিন্তয়েনুনিঃ .. ১৫..
 ত্রিগুণাত্মাশেষলোকমালিকাসূত্রমস্ম্যহম্ .
 ইতি নিশ্চয়মেবাত্র হুপবীতং পরং মতম্ .. ১৬..
 অনেকবাসনামিশ্রপ্রপথেযং ধৃতো মযা .
 নান্যেনেতানুসন্ধানমাত্মনরচন্দনং ভবেৎ .. ১৭..
 রজঃসত্ত্বতমোৰ্ভূতিত্যাগরূপৈস্তিলাক্ষতৈঃ .
 আত্মলিঙ্গং যজেন্নিত্যং জীবনুক্তিপ্রসিদ্ধয়ে .. ১৮..
 ঈশ্বরো গুরুরাত্মেতি ভেদত্রয়বিবরিজতৈঃ .
 বিল্বপত্রৈরদিবতীযৈরাত্মলিঙ্গং যজেচ্ছিবম্ .. ১৯..
 সমস্তবাসনাত্যাগং ধূপং তস্য বিচিন্তয়েৎ .
 জ্যোতিরমযাত্মবিজ্ঞানং দীপং সন্দরশযেদ্বুধঃ .. ২০..
 নৈবেদ্যমাত্মলিঙ্গস্য ব্রহ্মাণ্ডাখ্যং মহোদনম্ .
 পিবানন্দরসং স্ৰব্দু মৃত্যুরসোপসেচনম্ .. ২১..
 অজ্ঞানোচ্ছিষ্টকরস্য ক্ষালনং জ্ঞানবারিণা .
 বিশুদ্ধস্যাত্মলিঙ্গস্য হস্তপ্রক্ষালনং স্মরেৎ .. ২২..
 রাগাদিগুণশূন্যস্য শিবস্য পরমাত্মনঃ .
 সরাগবিষযাত্যাসত্যাস্তাম্বুলচরষণম্ .. ২৩..
 অজ্ঞানধবান্তবিধবংসপ্রচণ্ডমতিভাস্করম্ .

আত্মনো ব্রহ্মতাজ্ঞানং নীৰাজনমিহাত্মনঃ .. ২৪..
 বিবিধব্রহ্মসংদৃষ্টিরমালিকাভিরলঙ্কৃতম্ .
 পুরগানন্দাত্মতাদৃষ্টিং পুষ্পাঞ্জলিমনুস্মরেৎ .. ২৫..
 পরিভ্রমন্তি ব্রহ্মাণ্ডসহস্রাণি মযীরবরে .
 কুটস্থচালকপোহমিতি ধ্যানং প্রদক্ষিণম্ .. ২৬..
 বিশ্ববনেদ্যাহমেবাস্মি নাস্তি বনেদ্যা মদন্যতঃ .
 ইত্যালোচনমেবাত্র স্ৰীঅলিঙ্গস্য বন্দনম্ .. ২৭..
 আত্মনঃ সত্ৰিক্রিয়া প্রোক্তা করতৰযাভাৰভাৰনা .
 নামকপৰযতীতাঅচিন্তনং নামকীরতনম্ .. ২৮..
 শ্রবণং তস্য দেবস্য শ্রোতৰযাভাৰচিন্তনম্ .
 মননং অ্ৰীঅলিঙ্গস্য মন্তৰযাভাৰচিন্তনম্ .. ২৯..
 ধ্যাতৰযাভাৰবিজ্ঞানং নিদিধ্যাসনমাত্মনঃ .
 সমস্তভ্রান্তিৰিক্ষেপরাহিতেনাত্মনিষ্ঠতা .. ৩০..
 সমাধিৰাত্মনো নাম নান্যচ্চিত্তস্য বিভ্রমঃ .
 তত্রৈব বহ্মণি সদা চিত্তবিশ্রান্তিৰিষ্যতে .. ৩১..
 এবং বেদান্তকল্পোক্তস্ৰীঅলিঙ্গপ্রপূজনম্ .
 কুরব্ৰনা মরণং ঝাপি ক্ষণং বা সুসমাহিতঃ .. ৩২..
 সরব্দুরবাসনাজালং পদপাংসুমিৰ ত্যজেৎ .
 বিধুযাজ্ঞানদুঃখৌষং মোক্ষানন্দং সমশ্নুতে .. ৩৩..
 .. ইতি শ্রীমত্পরমহংসপরিবরাজকাচার্যস্য শ্রীগোবিন্দভগবত্পূজ্যপাদ
 শিষ্যস্য শ্রীমচ্ছঙ্করভগবতঃ বিৰচিতা নিরগুণমানসপূজা সমাপ্ত ..

Please send corrections to Sunder Hattangadi (sunderh@hotmail.com)